''मैं ब्राह्मण के विरोध में नहीं हूँ,

ब्राह्मणवाद के विरोध में हूँ।''

- बाबा साहेब डा. अम्बेडकर

सत्यार्थ उद्‌बोधन

लेखक

एस. एफ. गंगावणे

राष्ट्रीय प्रचारक, बामसेफ

izdk'kd

Mh- ds- [kkiMsZ eseksfj;y VªLV

15-डी/203, कल्पक इस्टेट,

ॲन्टॉप हिल, मुंबई-37

^^eSa czkã.k ds fojks/k esa ugha gw¡] czkã.kokn ds fojks/k esa gw¡A**

& MkW- ckck lkgsc vEcsMdj

लेखक: **एस. एफ. गंगावणे,** राष्ट्रीय प्रचारक, बामसेफ

प्रकाशक

डी.के. खापर्डे मेमोरियल ट्रस्ट

15-डी/203, कल्पक इस्टेट, ॲन्टॉप हिल, मुंबई-37

© डी. के. खापर्डे मेमोरियल ट्रस्ट

प्रथम आवृति : दिसम्बर, 2005 (1000 प्रतियाँ)

द्वितीय आवृति : दिसम्बर, 2006 (1000 प्रतियाँ)

सहयोग राशि : 10/- रूपये

वितरण

बामसेफ केन्द्रीय कार्यालय

10795, फूलवाली गली, मानकपुरा, ईस्ट पार्क रोड,

करोलबाग, नई दिल्ली - 110 005

टेलिफैक्स: 011- 23614369

e-mail: bamcef_s17809@yahoo.com

visit us at: www.bamcef.org

डी. के. खापर्डे मेमोरियल ट्रस्ट

बामसेफ संस्थापक यशकायी डी. के. खापर्डे साहेब ने बामसेफ संगठन की नींव रखकर अपने जीवन के 27 साल संगठन को मजबूत एवं शक्तिशाली बनाने में लगाये। 27 साल के संगठन के अनुभव के बाद मा. डी. के. खापर्डे साहेब इस मत पर पहुँचे कि जब तक संगठन को चलाने वाले मानव संसाधनों का निरंतर निर्माण नहीं होते रहेगा तब तक सामाजिक क्रांति का लक्ष्य हासिल नहीं हो सकता। आदरणीय डी. के. खापर्डे साहेब के इस सपने को साकार करने हेतु उनके मरणोपरांत बामसेफ के कैडर्स ने उनके स्मरणार्थ एक ट्रस्ट की स्थापना की और उसके द्वारा मानव संसाधन विकास एवं अनुसंधान के निर्माण की शपथ ली थी। अपनी प्रतिबद्धता के अनुसार बामसेफ ने डी. के. खापर्डे मेमोरियल ट्रस्ट की स्थापना सन् 2001 में की और धर्मदाय आयुक्त के साथ मुंबई ट्रस्ट ऍक्ट के अंतर्गत ट्रस्ट को पंजीकृत कर लिया (रजि. नं. 19185/2001/मुंबई)। ट्रस्ट के द्वारा ''मानव संसाधन विकास एवं अनुसंधान संस्थान'' का शिलान्यास उनके प्रथम स्मृति दिवस (29 फरवरी 2004) के अवसर पर रिंगणाबोड़ी, अमरावती रोड़, नागपुर (महाराष्ट्र) में 25 एकड़ की जमीन पर किया गया। इस संस्था के मुख्य उद्देश्य निम्न प्रकार हैं।

(1) इस संस्थान के निर्माण का मुख्य उद्देश्य सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, क्रीड़ा, प्रचार-माध्यम इन विभिन्न क्षेत्रों में मानवीय संसाधनों को तैयार करना है जिससे वे इतिहास, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, साहित्य एवं नृविज्ञान क्षेत्र में अपने ज्ञान का उपयोग कर नये अनुसंधान करेंगे और इन अनुसंधानों/खोजों को कैडर को निरंतर प्रशिक्षित करने के लिए इस्तेमाल करेंगे ताकि ज्वलंत विषयों पर सभी कैडर्स के पास पर्याप्त और नवीनतम जानकारी

रहे। ऐसे प्रशिक्षित कैडर्स एवं कार्यकर्ताओं को संपूर्ण देश में प्रचार-प्रसार हेतु नियुक्त किया जायेगा और फूले-अम्बेडकरी आंदोलन की जड़े और मजबूत की जायेगी।

(2) इस ट्रस्ट के द्वारा मूलनिवासी बहुजन समाज के निर्माण के लिए आवश्यक प्रचार माध्यम एवं साहित्य का निर्माण किया जायेगा ताकि फूले-अम्बेडकरी आंदोलन को और तेज किया जा सके।

(3) इस संस्थान में एक ऐसे पुस्तकालय का निर्माण किया जायेगा जिसमें विभिन्न क्षेत्र के इतिहास, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र तथा विभिन्न साहित्य को रखा जायेगा। हमारे महापुरूषों के जीवन एवं आंदोलन पर लिखे गये विभिन्न भारतीय तथा अंतर्राष्ट्रीय लेखकों का साहित्य, अलग-अलग विषयों पर रिपोर्टस्, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित पुस्तकें एवं रिपोटर्स, विभिन्न राज्य सरकारों, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों एवं एंजेसियों द्वारा प्रकाशित सभी साहित्य उपरोक्त पुस्तकालय में उपलब्ध होगा।

(4) इस संस्था के माध्यम से फूले-अम्बेडकरी आंदोलन के प्रचार-प्रसार हेतु विभिन्न पत्र-पत्रिकाएं, नियतकालिक एवं दैनिक प्रकाशित करने का भी प्रावधान रखा गया है।

आपका

बी. डी. बोरकर
चेयरमैन
डी. के. खापर्डे मेमोरियल ट्रस्ट

बामसेफ जब ब्राह्मण तथा ब्राह्मणवाद पर करारे प्रहार करती है तो हमारे ही कुछ लोग यह कहते हुए नजर आते है कि ''आप कब तक ब्राह्मणों को गालियाँ देते रहोगे, यह गड़े मुर्दे क्यों उखाड़ते हो, गालियाँ देने से परिवर्तन नही हो सकता, दुश्मनी से दुश्मनी बढती है'', ऐसा मानवतावादी उपदेश भी करते हैं। इतना ही नहीं तो यह भी दलील दी जाती है कि बाबासाहेब डा. अम्बेडकर ने स्वयं कहा है कि ''मै ब्राह्मण के विरोध में नही हूँ, ब्राह्मणवाद के विरोध मे हूँ'' और आप लोग जब देखो तब ब्राह्मण / ब्राह्मणवाद विरोध का ही राग अलापते रहते हो। यह दलील खासकर हमारे समाज के बुद्धिजिवी तथा विद्वान साहित्यकार जिनका ब्राह्मणों से निकट का संवाद और संपर्क होता है, वे देते है । क्योंकि ब्राह्मण उनको कान-मंत्र देते रहते है कि बाबासाहेब ने स्वयं कहा है कि मैं ब्राह्मण के खिलाफ नहीं हूँ और तुम्हारे लोग हमें बेवजह कोसते रहते है। इस बात का प्रचार विशेषकर अन्य प्रांतों की तुलना मे महाराष्ट्र प्रांत मे ज्यादा मात्रा में होता है। फूले-अम्बेडकरी आंदोलन की विरासत महाराष्ट्र है जिस पर ब्राह्मणवाद को ध्वस्त करने की जिम्मेदारी बहुत अधिक है और यह प्रदूषण यदि महाराष्ट्र के अम्बेडकरवादियों मे फैलता है तो इसे अन्य प्रांतों मे फैलाने के लिये ब्राह्मणवादियों को आसान हो जाता है। इस प्रदूषण के कितने घातक दुष्परिणाम आंदोलन पर होते है इसके बारे में हमारे समाज को सजग करना जरूरी है। इस विषय पर चर्चा करना हमने आवश्यक समझा और इसलिए इसे चर्चा का विषय बनाया गया।

साथियों, हर बात का संदर्भ होता है, व्यक्ति हवा मे नहीं बोलता, हवा मे विचार नहीं करता तथा हवा मे नहीं लिखता। कोई परिस्थिती पैदा होती है और उस परिस्थिती के पार्श्वभूमि मे ही व्यक्ति विचार करता है, बोलता है और लिखता है। उस परिस्थिती के संदर्भ के कारणों का यदि पता नही है तो अर्थ के अनर्थ निकाले जा सकते है। इसलिए उपरोक्त कथन बाबासाहेब ने कब, क्यों और किस परिस्थिती के कारण कहा इसे जाने बगैर ही हमारे लोग इस वाक्य का इस्तेमाल सरेआम ब्राह्मणों के समर्थन में करते रहते है।

वास्तव मे उपरोक्त कथन ऐसा है ही नहीं लेकिन इससे मिलता जुलता वह कथन है जिसका आशय तथा भावार्थ एक जैसा ही है। यह कथन मराठी में है जिसका हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है: ''हम ब्राह्मणों के खिलाफ नहीं हैं यह हम घोषित करना चाहते है। हमारा कटाक्ष ब्राह्मणवाद पर है, ब्राह्मण लोग हमारे दुश्मन नही है बल्कि ब्राह्मण्यग्रस्त लोग हमारे दुश्मन है ऐसा हम मानते हैं। ब्राह्मणवाद की भावना से प्रेरित ब्राह्मणग्रस्त गैर-ब्राह्मण हमें दूर का लगता है और ब्राह्मण्य विरहित ब्राम्हण हमें नज़दीक का लगता है।''

उक्त कथन बाबासाहेब को किस परिस्थिति के कारण कहना पडा इसका संदर्भ यह है कि मा. केशवराव जेधे तथा मा. दिनकरराव जवलकर जो उस जमाने के राष्ट्रपिता जोतिराव फूले के 'सत्यशोधक' समाज इस संगठन के अग्रणी मराठे नेता थे और उनका बाबासाहेब के महाड तालाब के सत्याग्रह मे बड़े पैमाने पर सहयोग और सहभाग था । लेकिन इस सत्याग्रह मे ब्राह्मणो को शामिल करने के वे सख्त खिलाफ थे और इसके लिये उन्होने बाबासाहेब को लिखित रूप से विरोध कर अपनी भावना व्यक्त की थी। जिसका जवाब देते हुए बाबासाहेब ने लिखा है कि मा. जेधे और मा. जवलकर इन्होंने ऐसी शर्त रखी है कि इस सत्याग्रह की सफलता के लिए किसी भी ब्राह्मण जाति के व्यक्ति को सत्याग्रह मे शामिल नही करना चाहिये। इस शर्त को हम स्वीकार नहीं कर सकते और उस शर्त के जवाब मे बाबासाहेब ने उक्त कथन मराठी पत्रिका 'बहिष्कृत भारत' दि. 01 जुलाई 1927 का संपादकीय लेख जो संपादक के नाते उन्होंने स्वयं लिखा है, उस में है। मा. केशवराव जेधे और मा. दिनकरराव जवलकर इन्होंने दि. 19 जून 1927 को बाबासाहेब को जो पत्र लिखा है जिसमें उन्होने उपरोक्त शर्त रखी थी, वह पत्र भी बाबासाहेब ने उसी अंक मे छापा हुआ है।

उपरोक्त संदर्भ से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि बाबासाहेब का वह कथन मा. जेधे और मा. जवलकरके उस शर्त का जवाब है जिस शर्त मे उन्होने बाबासाहेब से अनुरोध किया था कि सत्याग्रह मे किसी भी ब्राह्मण को शामिल नहीं करना चाहिये।

बाबासाहेब ने मा. जेधे और जवलकर इन मराठे नेत-ाओं को इस तरह का जवाब क्यों और किस परिस्थिती के कारण दिया है?

महाड तालाब के सत्याग्रह की पूर्व तैयारी के रूप मे दि. 19 और 20 मार्च 1927 को 'दो दिवसीय कुलाबा जिला महार परिषद' बाबासाहेब ने महाड शहर मे आयोजित की थी। परिषद के अंत मे दि. 20 मार्च 1927 को बाबासाहेब ने अपने सहयोगियों को साथ लेकर उस तालाब को छू कर प्राणी प्राशन किया था। इस मे ध्यान देने योग्य बात

यह है कि बाबासाहेब ने उस तालाब को छूने के कार्यक्रम की कोई पूर्व घोषणा नहीं की थी क्योंकि यदि इसकी घोषणा पहले ही की होती तो ब्राह्मणों ने पिछड़े वर्ग के लोगों को भड़काकर संपूर्ण तैयारी के साथ अछूतों की बेरहमी से पिटाई करने की योजना बनायी होती और बाबासाहेब ऐसा कोई मौक़ा सवर्णों को देना नहीं चाहते थे और इसलिए यह बातें बाबासाहेब ने अंत तक गुप्त रखी थी। लेकिन कोई घोषणा किये बगैर ऐन वक्त पर यकायक तालाब को छूने पर भी महाड के स्पृश्यों ने बाबासाहेब और उनके सहयोगियों पर अचानक जानलेवा हमला किया था और उन हमलावरों में अधिकांश हमलावर गैरब्राह्मण यानी पिछड़े वर्ग तथा मराठे भाई थे। इस हमले की बाबासाहेब ने दिनांक 22-4-1927 के 'बहिष्कृत भारत' पत्रिका मे अपने संपादकी य लेख मे कड़े शब्दो में निन्दा की है।

देहातों मे पिछड़े वर्ग तथा मराठों द्वारा अछूतों की मार-पीट यह आम बात थी और बाबासाहेब इन वारदाताओं से अच्छी तरह वाक़िफ़ थे दि. 12-8-1927 के 'बहिष्कृत भारत' पत्रिका मे बाबासाहेब ने ''देहातों मे अछूतों पर होनेवाले जुल्म'' इस शीर्षक के खबर मे लिखा है कि ''दि. 15-7-1927 को निलोंड पाडा इस गांव मे एक उदंड मराठा ने अपना मुर्दाड क्षात्र तेज दिखाने के लिये निरपराधी गरीब महारों पर लाठी चलायी और उसके तुरंत बाद उसके दो भाईयों ने भी महारों की लाठियों से जमकर पिटाई की।''

दूसरी भी और ध्यान देने योग्य बात है कि दि. 25 दिसम्बर 1927 के नियोजित महाड तालाब सत्याग्रह पर प्रतिबंध लाने के लिये महाड शहर के स्पृश्य लोगों ने 12-12-1927 को कोर्ट मे केस दायर की थी जिसमें नौ दावेदार थे, उन नौं में से सिर्फ तीन ब्राह्मण थे और शेष गैर ब्राह्मण थे जिनमें एक मराठा भी शामील था ।

उपरोक्त सभी वारदातों से यह सिद्ध होता है कि महाराष्ट्र मे अछूतों पर अकसर अत्याचार करनेवाले अधिकांश गैर ब्राह्मण यानी पिछड़े वर्ग के ही लोग होते थे जिसमें मराठों की प्रमुख भूमिका रहती थी। कमोबेश यही हालत आज भी भारत के देहातों मे हमें देखने को मिलती है। मराठों द्वारा अछूतों के उत्पीड़न का यह घिनौना अनुभव बाबासाहेब के पास था। ऐसे स्थिती में जब 'सत्यशोधक समाज' के मराठे नेता मा. जेधे और जवलकर बाबासाहेब को नसीहत देते हैं कि तालाब के सत्याग्रह में ब्राह्मणो को शामिल नहीं करना चाहिये तब बाबा साहेब का यह जवाब बिल्कुल लाज़िमी है कि मुझे सत्याग्रह में ब्राह्मणो को शामिल न करने की नसीहत देने के बजाय आप अपने जात भाई मराठों को क्यों नही समझाते कि अछूतों पर अत्याचार करने के लिये वे ब्राह्मणों का साथ क्यों देते है? यानी बाबासाहेब मा. जेधे और मा. जवलकर को यही कहना चाहते हैं कि ऊँच-नीचता का भेदभाव दफ़नाने मे जब ब्राह्मण मेरा साथ सत्याग्रह में दे रहे हैं तो आप उन्हें विरोध करते हो। लेकिन तुम्हारे अपने मराठे जात भाई इसी भेदभाव के कारण

अछूतों की जब बेहरमी से पिटाई करते है तो आप लोग चुप चापसे देखते रहते हो। इसी आशय का अनुरोध बाबासाहेब ने मराठा नेताओं को तालाब सत्याग्रह के ठिक दो दिन पहले दि. 23 दिसंबर 1927 को 'बहिष्कृत भारत' पत्रिका मे लिखित रूपसे किया है जो इस प्रकार है :-

''महाड मे जो कुछ भी जनमत अछूतों के विरोध मे है, उसे कम तथा अछूतों के अनुकूल करने का परम कर्तव्य स्पृश्य लोगों के नेताओं ने करना चाहिये। यह कर्तव्य ब्राह्मणवर्ग के नेता कम-ज्यादा प्रमाण मे निभा रहे है ऐसा नज़र आता है। लेकिन गैर-ब्राह्मण नेताओं ने इस बारे मे कुछ भी नही किया है। देहातों के मराठे और दूसरे गैर-ब्राह्मण लोग अछूतों के सत्याग्रह का जबरदस्त विरोध करने की तैयारी कर रहे है ऐसी शिकायतें हमारे सुनने में हैं। ऐसे समय जिम्मेदार गैर-ब्राह्मण नेताओं ने कुलाबा जिले में जाकर अपने जातभाईयों को समझाना जरूरी है।''

इन सभी कारणों और प्राप्त परिस्थिती मे मा. जेधे तथा मा. जवलकर इन मराठों के उस शर्त को दिया हुआ बाबासाहेब का वह जवाब है कि 'हम ब्राह्मणोंके विरोध मे नही है। हमारा कटाक्ष ब्राह्मणवाद पर है। ब्राह्मणवाद के भावनासे प्रेरित ब्राह्मण्यग्रस्त गैरब्राह्मण हमें दूर का लगता है और ब्राह्मण्य विरहित ब्राह्मण हमें नज़दीक का लगता है।''

बाबासाहेब ने महाड तालाब सत्याग्रह मे ब्राह्मणों का साथ क्यों लिया ?

इस सत्याग्रह मे सहयोग करनेवाले छः ब्राह्मण थे 1) श्री. गंगाधर नीलकंठ सहस्त्रबुद्धे, 2) श्री. अ. वि. चित्रे, 3) श्री. सुरेन्द्रनाथ टिपणीस, 4) श्री. शांताराम पोतनीस, 5) श्री. केशवराव देशपांडे और 6) श्री. वामनराव पत्की. पहली महत्वपूर्ण बात खासकर यह दलील देने वाले कि बाबासाहेब ब्राह्मणो के विरोधी नहीं थे उन्होंने समझना चाहिये कि महाड तालाब का सत्याग्रह यह सार्वजनिक कार्यक्रम था भले ही वह बाबासाहेब के संगठन द्वारा आयोजित किया हो। यह कार्यक्रम छुआ-छूत समाप्त करने तथा अछूतों के मानवीय अधिकार प्रस्थापित करने का कार्यक्रम था और अछूतों के अलावा जो लोग अपनी स्वेच्छा से इसमें सहयोग देना चाहते थे और सत्याग्रह के सफलता के दृष्टि से उनका ज्यादा से ज्यादा सहयोग और सहकार्य प्राप्त करना यह बाबासाहेब के रणनीति का हिस्सा था। वैसे भी सार्वजनिक कार्यक्रमों में शामिल होने के लिये किसी भी नागरिक को मना नही किया जा सकता ।

इस संदर्भ में दि.29-7-1927 के 'बहिष्कृत भारत' पत्रिका मे उद्धृत किया हुआ बाबासाहेब का दूसरा कथन अत्यंत महत्वपूर्ण है। वह कथन इस प्रकार है 'ब्राह्मणों को अलग करना यह सैद्धांतिक दृष्टि से गलत तो है ही लेकिन ऐसा करना रणनीतिक दृष्टिसे भी

ठीक नही है।' वह कौन सा सिद्धांत है जिसकी वजह से सत्याग्रह से ब्राह्मणों को अलग करना बाबासाहेब गलत मानते है, इसे समझना बहुत जरूरी है। बाबासाहेब ने 'जाति व्यवस्था विरोधी आंदोलन' इस सत्याग्रह के माध्यम से प्रारंभ किया है और उसी जाति विध्वंसक सत्याग्रह से जाति के कारण ही ब्राह्मणों को अलग करना उसका मतलब जाति व्यवस्था ध्वस्त करने निकले डा. अम्बेडकर स्वयं जातिवादी सिद्ध हो जाते है, यह वो सिद्धांत हीनता है। जिसे बाबासाहेब कदापि बरदाश्त नहीं कर सकते। मा. जेधे-जवलकर के दबाव मे आकर यदि बाबासाहब ने ब्राह्मणों को जाति के आधार पर ही सत्याग्रह मे शामिल ना किया होता तो बाबासाहेब पर जातिवाद का यह मानवता विरोधी कलंक इतिहास मे हमेशा-हमेशा के लिया दर्ज किया जाता। इस विवाद का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि बाबासाहेब का ब्राह्मणों को अपने साथ लेने का मामला यह केवल तालाब सत्याग्रह यानी केवल सार्वजनिक कार्यक्रम में शामिल करने का मामला था और वहाँ तक ही सीमित था, उन्हें अपने आंदोलन तथा संगठन मे हमेशा के लिए शामिल करने का मामला नहीं था। इसलिए उस सत्याग्रह मे जो भी ब्राह्मण शामिल हुये थे वे आगे चलकर बाबासाहेब के किसी भी संगठन या आंदोलन मे नजर नही आते। इसका मतलब यह है कि ब्राह्मणो को शामिल करने का मामला बाबासाहेब ने उस सत्याग्रह तक ही सीमित रखा था।

दूसरा महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि यह सत्याग्रह बाबासाहेब के नेतृत्व में हो रहा था, न कि ब्राह्मणों के नेतृत्व में। क्योंकि ब्राह्मण अक्सर जहा भी जाते है नेता बनने के लिये ही जाते है, अनुयायी बनने के लिए नहीं। परंतु इस सत्याग्रह मे बाबासाहेब ने यह खबरदारी ली थी और उन्हें नेतृत्व के स्थान पर नहीं रखा था।

दिनांक 29-7-1927 के 'बहिष्कृत भारत' मे छपे हुये कथन का दूसरा भाग है 'रणनीतिक दृष्टिसे भी वह ठीक नही होगा' इसका क्या अर्थ है? ब्राह्मणो को सत्याग्रह में शामिल करने की बाबासाहेब की वह कौन सी रणनीति है? इसे समझना जरूरी है।

25 दिसंबर 1927 को होने जा रहे प्रायोजित सत्याग्रह पर न्यायालय ने प्रतिबंध लगाने के कारण सत्याग्रह को रोकना पडा था। उसके उपरांत वही पर सत्याग्राहियों की जनसभा हुई और जनसभा मे मनुस्मृति दहन का प्रस्ताव मा. गंगाधर नीलकंठ सहस्त्रबुद्धे नाम के ब्राह्मण व्यक्तिने रखा जो सर्वमत से पारित हुआ और उसके बाद सभास्थान से दूर पूर्वनियोजित स्थान पर शाम को मनुस्मृति जलायी गयी। यह बहुत ही चौंकानेवाली घटना है कि मनुस्मृति दहन के कार्यक्रम का आयोजन यद्यपि बाबासाहेब ने किया था लेकिन बाबासाहेब ने स्वयं मनुस्मृति नही जलाई वह सहस्त्रबुद्धे और चित्रे इन दोनों ब्राह्मणों के हाथो धर्मशास्त्रों के मंत्र पढकर जलाई है।

महाड तालाब सत्याग्रह की तारीख तथा स्थान तय करने का फैसला 19/20 मार्च

1927 को हुए 'कुलाबा जिला महार परिषद' के एक महीने बाद यानी सत्याग्रह के आठ महीने पहले किया था। परंतु मनुस्मृति दहन का कोई भी निर्णय तथा जिक्र उस परिषद मे नही किया था। मनुस्मृति दहन के बारे में इन आठ महीनों के दरम्यान बाबासाहेब ने कोई भी वक्तव्य नहीं किया है।

मनुस्मृति जलाने के उपरांत इस सत्याग्रह का 'बहिष्कृत भारत' का जो विशेषांक निकाला है उस में मा.शिवतरकर, जनरल सेक्रेटरी इनके नाम से सत्याग्रह की कार्यक्रम पत्रिका निकाली थी वह भी उस अंक में छपी हुई है। उस में दूसरे अन्य कार्यक्रमों के साथ मनुस्मृति दहन के कार्यक्रम का उल्लेख है। परंतु वह कार्यक्रम पत्रिका जिस अंक मे छपी है, वह सत्याग्रह का विशेषांक है जिसकी तारीख 25-26 और 27 दिसम्बर 1927 छपी है और वह विशेषांक सत्याग्रह के बाद छापा है। इसका मतलब मनुस्मृति दहन की तारीख मौखिक या लिखित रूप मे बाबासाहेब ने दहन के पूर्व घोषित नहीं की थी और उसे अंत तक गुप्त रखा था, अन्यथा धार्मिक भावनाएँ भड़काने के आरोप में मनुस्मृति दहन कार्यक्रम पर कोर्ट द्वारा प्रतिबंध लगाने की या धर्मयुद्ध घोषित करने की योजना बनाने की कोई कसर ब्राह्मणों ने नहीं छोड़ी होती। इसलिए मनुस्मृति दहन का कार्यक्रम पूर्ण रूप से गुप्त रखने की योजना बाबासाहेब ने बनायी थी।

महाड तालाब का सत्याग्रह करने का फैसला आठ महीने पहले करने के बावजूद भी उस फैसले के साथ मनुस्मृति दहन करने का कोई फैसला न करना जबकि सत्याग्रह और मनुस्मृति दहन का कार्यक्रम एक ही स्थान तथा एक ही दिन होना था, मनुस्मृति दहन का प्रस्ताव ऐन मौके पर सत्याग्रह के दिन ही और वह भी एक ब्राह्मणद्वारा पारित करवाना, मनुस्मृति दहन के कार्यक्रम को अंत तक गोपनीय रखना ओर मनुस्मृति दहन भी ब्राह्मणों के हाथों करवाना, यह इतनी सारी महत्वपूर्ण घटनाओं की श्रृंखला महज़ एक संजोग नही था, यह बाबासाहेब अम्बेडकर की पूर्व निर्धारित योजनाबद्ध व्यूहरचना थी।

बाबासाहेब के उस कथन का जिसमें वे कहते है कि 'रणनीतिक दृष्टिसे भी ब्राह्मणों को सत्याग्रह से अलग करना ठीक नहीं होगा', यदि इसका विश्लेषण करते है तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि इसके पीछे बाबासाहेब की बहुत ही गहन और गंभीर ऐसी सोची समझी तथा सुलझी हुई रणनीति थी।

बाबासाहेब की क्या रणनीति थी?

ढाई हजार सालों के इतिहास मे किसी अछूत ने ब्राह्मणों का एक धर्मग्रंथ सार्वजनिक रूपसे जलाना यह भारत के इतिहास मे अत्यंत विस्फोटक तथा क्रांतिकारी दस्तक थी। इसकी प्रतिक्रिया मे महाभयंकर प्रलयकारी रणसंग्राम होने की संपूर्ण संभावना बरकरार थी और ऐसे संभावित क्रूर रणसंग्राम का सामना करने निहत्थे, दुर्बल और मज़दूर अछूत

सक्षम नहीं थे यह बात बाबासाहेब भलीभाँति जानते थे। फिर भी इतनी बडी जोखीम बाबासाहेब ने उठायी थी। इसलिए मनुस्मृति दहन के कार्यक्रम को जितना हो सके उतना गोपनीय रखने की खबरदारी बाबासाहेब ने ली और उसे ऐन मौके पर घोषित किया गया था। यदि मनुस्मृति दहन का कार्यक्रम समय के पूर्व घोषित किया होता तो ब्राह्मणवादी शक्तियोनें पूरी तैयारी के साथ तालाब का सत्याग्रह विफल कराने में कोई कसर नहीं छोड़ी होती।

महाड के तालाब का सत्याग्रह बाबासाहेब के आंदोलन का मील का पत्थर (Mile Stone) था और इसलिए बाबासाहेब इस सत्याग्रह को हर हालत मे विफल नहीं होने देना चाहते थे। क्योंकि यह सत्याग्रह यदि विफल हो जाता तो अछूतों का मनोबल पूरी तरह टूट जाता और वे निराशा के गर्त मे डूब जाते और फिर आंदोलन के लिये खड़े होने का ढाड़स कभी ना करते; मनुस्मृति दहन से जो परिणाम बाबासाहेब हासिल करना चाहते थे वे परिणाम धरे के धरे रह जाते और जिस मक़सद से बाबासाहेब इस क्रांतिकारी आंदोलन का प्रारंभ एक मजबूत नीव गढ़ाकर करना चाहते थे, वह आंदोलन शुरू होने के पहले की खत्म हो जाता।

तालाब सत्याग्रह और मनुस्मृति दहन से बाबासाहेब दो महत्वपूर्ण परिणाम हासिल करना चाहते थे। पहला, उन्हें अपना आंदोलन राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाना था और उसके लिये संपूर्ण भारत केअछूतों में मनुस्मृति दहन के संदेश द्वारा उनका मनोबल ऊँचा उठाकर उनमें स्वाभिमान पैदा करना था और अपने आंदोलन को मजबूती प्रदान करने के लिए उनका समर्थन जुटाना था। दूसरा परिणाम वे अपना नेतृत्व राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करना आवश्यक समझते थे क्योंकि अछूतों मे हज़ारों सालों से कोई सक्षम नेतृत्व अस्तित्व मे ना होने के कारण वे हताश और निराश थे। यह तभी संभव हो सकता था यदि बाबासाहेब की छवि देश मे एक सशक्त शेर दिल कुशल क्रांतिकारी योद्धा और बहुमुखी विद्वान के रूप मे उभर कर आती। मनुस्मृति दहन और तालाब सत्याग्रह वह चिंगारी थी जिसके कारण बाबासाहेब के सच्चे नेतृत्व की प्रतिमा एक ही दिन मे संपूर्ण देश पर छा गयी और वे अछूतों के आँखों का तारा बन गये और अछूतों का हौसला बुलंदियों को छू गया। क्योंकि एक ही दिन देश के सभी समाचार पत्रों मे मनुस्मृति दहन की खबर शीर्षपंक्ति की खबर थी। इग्लैंड के Times London ने भी इस खबर को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचा दिया। उस जमाने मे आधुनिक तकनीक के कोई संचार साधन उपलब्ध नही थे। लेकिन बाबासाहेब ने यह ऐतिहासिक करिश्मा बगैर संचार साधनों के कर दिखाया था।

इस सत्याग्रह मे ब्राह्मणो को शामिल इसलिए किया था क्योंकि मनुस्मृति का दहन बाबा साहेब ब्राह्मणो के हाथों करवाना चाहते थे ताकि सत्याग्रह विरोधी ब्राह्मणोंको गैर ब्राह्मण लोगों का साथ न मिल सके और अछूत विरोधी धार बेधार कर अछूतों का बचाव

किया जा सके। यदि ब्राह्मण मनुस्मृति जलाते हैं तो इसका सीधा दोषारोपन बाबा साहेब पर नहीं किया जा सकता और जो मनुस्मृति ब्राह्मणों को सर्वोच्च स्थान प्रदान करती है वही ब्राह्मण यदि इसे जलाते हैं तो ब्राह्मणी धर्म ग्रंथ की मान्यता और पवित्रता खतरे में पड़ती हैं और साथ ही साथ शूद्र तथा अछूत दोनों भी जो इन ग्रंथो के कारण सताए हुए है उनकी आपस की दूरी भी कम हो जाती है, यही बाबासाहेब अम्बेडकर की रणनीति ब्राह्मणों को सत्याग्रह मे शामिल करने की थी।

इसी कड़ी में उस सत्याग्रह को सफल बनाने के लिये बाबासाहब ने अपनी रणनीति का दूसरा एक अनोखा और चौंकाने वाला बेहतरीन हथकंडा अपनाया था। जिस स्थल पर सत्याग्रह परिषद आयोजित की थी उस स्थान पर एक विशाल मंडप खड़ा किया गया था और उस मंडप मे केवल एक ही तस्वीर लटका कर रखी थी और वह तस्वीर म. गांधी की थी। क्या इसका मतलब यह निकाला जाय कि बाबासाहेब गांधी भक्त थे? वास्तव में सत्याग्रह के एक महीने पहले बाबासाहेब ने 'बहिष्कृत भारत' के दि. 25-11-1927 के अंक मे गांधी के अहिंसात्मक सत्याग्रह की भरसक आलोचना की थी और गांधी की अहिंसा यह व्यापकअर्थ मे हिंसा ही है ऐसा घोषित किया था। परंतु उस मंडप मे गांधी की तस्वीर लगाना यह उनके रणनीति का हिस्सा था क्योंकि उस जमाने मे म. गांधी हिन्दुओं के और काँग्रेस के सर्वमान्य नेता थे और सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि गांधी अस्पृश्यता निवारण की ढपली जोर शोरसे बजाते थे। बाबासाहेब ने इसी बात का बहुत ही बखूबी से उपयोग किया और गांधी की तस्वीर लगाने के बहाने सवर्णों का सत्याग्रह विरोध तथा अछूत विरोध दबाने के लिये रणनीतिपूर्वक इस्तेमाल किया। इस तस्वीर के माध्यम से बाबासाहब विरोधियों को यह संदेश देना चाहते थे कि गांधी जी अस्पृश्यता निवारण का जो कार्यक्रम चला रहे है उसी कार्यक्रम को मै आगे बढा रहा हूँ और आप लोग इसका विरोध कर रहे है यानी गांधी का विरोध कर रहे है। उस सभा में महात्मा गांधी की जय,तिलक की की जय, आगरकर की जय, लोकहितवादी की जय, संत एकनाथ महाराज की जय, जय शिवराय, जिजामाता की जय, यह नारे भी लगाये । इस तरह बाबासाहेब ने हर मक़ाम पर अपने विरोधियों के हौसले पस्त कर डाले थे। इस प्रकार इस सत्याग्रह को सफल बनाने का जो लक्ष्य बाबासाहेब ने अपने सामने रखा था उसे हासिल करने के लिये सभी बाधाओं को दूर करने के इरादे से उन्होने ब्राह्मणो का सहयोग लिया था । जिन 6 ब्राह्मणो के नाम मैंने गिनाए है, वे ब्राम्हण बाद के किसी भी आंदोलन मे बाबासाहेब के साथ नजर नहीं आते। यह इस बात का सबूत है कि उनका सहयोग केवल तालाब सत्याग्रह तक ही सीमित था।

बाबा साहेब डा. अम्बेडकर ब्राह्मण जाति और

ब्राह्मणवाद इन दोनों के भी विरोधी थे

'मै ब्राह्मण के विरोध मे नही ब्राह्मणवाद के विरोध मे हूँ।' बाबासाहेब का यह कथन 1927 में लिखा हुआ कथन है, परंतु उसके बाद निर्मित की हुई अपनी अधिकांश ग्रंथ संपदा में उन्होंने ब्राह्मण और ब्राह्मणवाद दोनों पर भी करारे प्रहार किये हैं। लेकिन हमारे विद्वान 1927 मे लिखा हुआ केवल एक मात्र कथन की ही रट लगाते रहते है और उसके बाद के कथनों के बारे में चुप्पी साधते हैं। इसलिए 1927 के बाद के कुछ चंद कथन मै आपकी जानकारी के लिये बताना जरूरी समझता हूँ ताकि सारी भ्रम की स्थिती स्पष्ट हो सके।

Anihiliation of Castes – 1936

a) अध्याय – 22

जाति व्यवस्था के चारों तरफ बनायी गई दीवार अभेद्य है और जिस सामग्री से इसका निर्माण किया गया है, उसमें तर्क और नैतिकता जैसे कोई ज्वलनशील वस्तु नहीं है। इसी दीवार के पीछे ब्राह्मणों की फौज खडी हैं, उन ब्राह्मणों की जो एक बुद्धिजीवी वर्ग है, उन ब्राह्मणोंकी जो हिन्दुओं के प्राकृतिक नेता हैं, उन ब्राह्मणों की जो वहाँ मात्र भाडे के सैनिक के रूप मे ही नहीं, बल्कि अपने जाति के लिये लड़ती हुई सेना के रूप में है।

गांधी को दिया गया उत्तर

किसी भी संत ने जाति व्यवस्था पर कभी हमला नहीं किया। इसके विपरित वे जातिव्यवस्था के पक्के विश्वासी रहे हैं। उनमें से अधिकतर उसी जाति के होकर जीए और मरे जिस जाति के वे थे।

संत ज्ञानदेव ब्राह्मण के रूप मे अपनी प्रतिष्ठा से इतने उत्कट रूपसे जुड़े हुये थे कि जब ब्राह्मणोंने उन्हें समाज में बने रहने से इनकार कर दिया, तो उन्होने ब्राह्मण पद की मान्यता पाने के लिये जमीन आसमान एक कर दिया था।

संत एकनाथ जो अछूतों को छूने तथा उनके साथ भोजन करने का साहस दिखाने के लिए धर्मात्मा बने हुये हैं, उन्होंने ऐसा इसलिए नहीं किया कि वे जात पात और छुआ छूत के विरूद्ध थे, जबकि उनकी मान्यता यही थी कि प्रदूषण को पवित्र गंगा नदी (अंत्याजाचा विटाळ ज्यासी, गंगास्नाने शुद्धत्व त्यासी एकनाथ भागवत) में स्नान करके धोया जा सकता है।

कोई ब्राह्मण विष्णु का पुजारी है जो प्रेम का देवता है। वह शंकर का भी पूजारी हो सकता है जो विनाश का देवता है। वह बुद्ध गया में भी पुजारी हो सकता है और बुद्ध की पूजा कर सकता है, जो मानवता के महानतम शिक्षक है, और इन्होंने सबसे श्रेष्ठ सिद्धांत 'प्रेम' का पाठ पढ़ाया है। वह काली का भी पुजारी हो सकता है जिसकी खून की प्यास

बुझाने के लिये रोज एक पशु की बलि देनी पड़ती है। वह राम के मंदिर का पूजारी भी होगा जो 'क्षत्रिय' भगवान है। वह परशुराम के मंदिर का भी पुजारी हो सकता हे, जिसने क्षत्रियों का नाश करने के लिये अवतार लिया था। वह ब्रह्मा का भी पूजारी हो सकता है जिसने संसार की रचना की है। वह पीर का पूजारी भी हो सकता है, जिसका भगवान अल्ला, संसार पर ब्रह्मा के आध्यात्मिक प्रभुत्व का दावा बरदाश्त नहीं करेगा।

इन भगवानों के लक्षण इतने विरोधात्मक है कि कोई ईमानदार भक्ति उन सभी का भक्त नहीं हो सकता। परंतु ब्राह्मण इन सभी का भक्त है।

लगभग सभी ब्राह्मणोंने जाति के नियम का उल्लंघन किया है। उन्होंने न केवल ऐसे व्यवसाय अपना लिये है जो उनके लिये शास्त्रों द्वारा वर्जित है। लेकिन ऐसे कितने ब्राह्मण है जो रोज जाति के नियम तोड़ते हैं, जो जाति और शास्त्रों के विरूद्ध उपदेश देते हैं क्योंकि उसकी मूल प्रवृति और नैतिक विवेक उनकी दृढ धारणा का समर्थन नहीं कर सकता। लेकिन ऐसे सैकड़ों हैं जो रोज जाति को तोड़ते है तथा शास्त्रों को रौंदते है। लेकिन वे जाति के सिद्धांत और शास्त्रों की पवित्रता के कट्टर समर्थक है। यह दोगलापन क्यों? क्यों कि वे महसूस करते है कि यदि जाति का जूता लोगों ने उतार फेंका तो ब्राह्मण वर्ग की सत्ता और सम्मान के लिये वे संकट पैदा कर देंगे। ब्राह्मण बुद्धिजीवी वर्ग की इस बेईमानी से आम लोग उनके विचारों के फल से वंचित रहे है, यह एक लज्जा जनक तथ्य है।

अध्याय – 20

आपके मतानुसार कुछ ब्राह्मण पुरातन पंथी होंगे लेकिन दूसरे ऐसे भी ब्राह्मण है जो आधुनिकता के प्रेमी है और यदि पुरातन पंथी ब्राह्मण जाति विध्वंस के कार्य से दूर रहते है लेकिन आधुनिकता के प्रेमी ब्राह्मण इस कार्य मे अवश्य सहयोग देंगे। आपके यह सभी तर्क सुनने मे बडे सुंदर और ग्राह्य प्रतीत होते है। परंतु इन तर्कों के साथ यह तथ्य भूला दिया जाता है कि जातिप्रथा की समाप्ति से ब्राह्मण के वर्चस्व तथा प्रतिष्ठा पर आघात होगा। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुये क्या यह आशा करना उचित होगा कि ब्राह्मण जातिप्रथा को नष्ट करने का लक्ष्य रखनेवाले किसी आंदोलन का नेतृत्व करेंगे? मेरा मानना है कि ब्राह्मणों में पुरातन पंथी ब्राह्मण और धार्मिक सुधारवाले आधुनिक ब्राह्मण ऐसा भेद करना मूर्खता है, क्योंकि वे दोनों जात भाई है और एक ही शरीर के दो हाथ है और एक हाथ के अस्तित्व के लिये दूसरा हाथ लड़े बगैर नहीं रह सकता। जैसे पोप बनने वाले व्यक्ति को क्रांतिकारी बनने की आवश्यकता नहीं होती। उसी प्रकार ब्राह्मण के घर पैदा हुये व्यक्ति को क्रांतिवीर बनने की बिल्कुल इच्छा नहीं होती। लेस्ली स्टीफन के शब्दों में कहा जाय कि जैसे नीली आँखों वाले सभी बच्चों की हत्या करने का कानून पारित करने की अपेक्षा ब्रिटिश संसद से नहीं की जा सकती। वैसे ही ब्राह्मणों से समाज

कार्य मे क्रांतिकारक की भूमिका अदा करने की अपेक्षा नहीं की जा सकती। यह दोनों भी अपेक्षा में भोंड़ी कल्पना हैं।

ल) रानाडे, गांधी और जिन्ना 18 जनवरी 1940

रानाडे की 101 वी जयंती थी और उस जयंती समारोह के मुख्य अतिथि के रूप मे बाबासाहेब ने जो भाषण दिया था वह पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है।

मैं बुद्धिजीवी वर्ग की दशा से आरंभ करता हूँ। सभ्यता का पालन पोषण तथा मार्गदर्शन उसके बुद्धिजीवी वर्ग पर ब्राह्मणों द्वारा प्रदत्त नेतृत्व पर निर्भर होना ही चाहिए। प्राचीन हिन्दू कानून के अधीन ब्राह्मणवर्ग को पुरोहित वर्ग का लाभ प्राप्त था और ब्राह्मण चाहे हत्या का दोषी हो उसे फाँसी की सजा नही दी जाती थी और ईस्ट इंडिया कंपनी उसे यह विशेषाधिकार 1817 तक देती रही। इसमें संदेह नहीं, क्योंकि उसपर श्रेष्ठता का ठप्पा लगा था। पर क्या उसमें कोई श्रेष्ठता शेष रह गयी थी? उसके व्यवसाय की समूची श्रेष्ठता लुप्त हो चुकी थी। वह समाज के लिये दीमक बन चुका था। ब्राह्मणों ने योजनाबद्ध तरीके से समाज को खोखला किया और धर्म का अनुचित लाभ उठाया। जिन दिनों पुराणों तथा शास्त्रों की रचना ब्राह्मण ने की वे उन धूर्तताओं की अनमोल खोज है जिनका दुरुपयोग ब्राह्मणोंने निर्धन, अशिक्षित तथा अंधविश्वासी हिन्दू जन साधारण को उल्लू बनाने, बहकाने तथा ठगने के लिये किया।

c) Who were the Shudras? 1946

प्रस्तावना –

ब्राह्मण लेखकों ने इतिहास के साथ जो शरारत की वह उनकी स्वाभाविक है। इस ब्राह्मणी साहित्य की पवित्रता बनाए रखने मे उनकी दोहरी चाल है। पहली बात तो यह कि उनके पूर्वजों ने जो लिखा उसका औचित्य बताना उनका पुत्रोचित कर्तव्य था जिसके लिये उन्होने सत्य का गला घोटने के लिये रस्सी को कसकर थामा हुआ है। दूसरी बात यह है कि इससे ब्राह्मणों की श्रेष्ठता बरकरार रहे, यह ध्यान रखना उनका परमधर्म है। कही उनका अपना सिंहासन डोल न पाये।

d) 4 दिसम्बर 1954 मे रंगून (बर्मा) मे बाबासाहेब का भाषण :

1954 मे रंगून (बर्मा) मे संपन्न हुये अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे बाबासाहेब ने जो भाषण दिया था उसी भाषण को उन्होने एक मेमोरैंडम का रूप देकर 'बुद्धिस्ट शासन कौंसिल, बर्मा' के साथ जो पत्र व्यवहार किया था उसे Dr. B. R. Ambedkar's writing & speaches Vol. - 17 Part III पृष्ठ क्र. 506 से 512 पर प्रकाशित किया है।

"The danger to Buddhism from Islam no longer exists but

the danger from Brahminism exists. It will be its toughest opponent. A Brahmin will remain a Brahmin no matter what colour he assumes or what party he joins. That is because Brahmins want to maintain the system of graded Social inequality. For it is this graded inequality which has raised the Brahmins above all and to be on the top of everybody. Budhism believes in equality. Budhism strikes at the very root of their Prestige and Power. That is why the Brahmins hate it. It is quite possible that if the Brahmins are allowed to lead the movement of revival of Buddhism they may use their power to sabotage it or misdirect it. The precaution to exclude them from position of power at least in the early stages of our movement is, therefore, very necessary.

e) Untouchables - 1948 by Dr. B. R. Ambedkar

प्रस्तावना

आज विद्वत्ता का पूरा ठेका सिर्फ ब्राह्मणों को मिला हुआ है। दुर्भाग्य से उन्होंने आज तक ऐसा कोई वॉल्टेयर पैदा नहीं किया जिसमें कॅथोलिक चर्च के सिद्धांतों के विरोध मे बिगुल बजाने की ईमानदार बौद्धिकता रही हो। भविष्य मे भी किसी ऐसे व्यक्ति के प्रकट होने की आशा नहीं है। यह ब्राह्मणों के विद्वत्ता पर घोर कलंक है कि वे एक वॉल्टेयर भी पैदा नहीं कर सके।

ब्राह्मणों ने कोई वॉल्टेयर क्यों पैदा नहीं किया? इस सवाल का जवाब भी एक सवाल ही है। तुर्की का सुलतान इस्लाम जगत की धर्म की जड़े क्यों नहीं उखाड़ पाया? कोई पोप पादरी कॅथोलिकवाद की निंदा क्यों नहीं करता? इग्लैंड की संसद ने ऐसा कानून क्यों नहीं बनाया कि किस तरह देश की तमाम नीली आँखोवाले किशोर किशोरियों को मार दिया जाय? इसका वही कारण है कि सुलतान या पोप या ब्रिटिश संसद ये कार्य करने मे चुप रहे वैसे ही ब्राह्मण भी कोई वॉल्टेयर पैदा नहीं कर सके।

यह ध्रुव सत्य है कि प्रत्येक ब्राह्मण, ब्राह्मणवाद का मुकुट धारण किये ही रहेगा चाहे वह रूढ़िवादी हो या नहीं, वह पुरोहित हो या गृहस्थ, विद्वान हो अथवा बुद्धि हीन, ब्राह्मण वॉल्टेयर कैसे बन सकता है? ब्राह्मणों में से कोई वॉल्टेयर पैदा हो गया तो वह उस व्यवस्था के लिये प्रत्यक्ष खतरा बन जाएगा जिसकी रचना ब्राह्मण की श्रेष्ठता बनाये रखने के लिये की गई है। सत्यता यह है कि ब्राह्मण की बौद्धिकता इसी दायरे मे सीमित है और उसे यह चिंता बनी रहती है कि उसका स्वार्थ सिद्ध होता रहे। उसकी यह अंतर्निहित दुर्बलताएँ है इसलिए उसकी प्रतिभा उस सीमा तक नहीं उभरती जिस सीमा तक उसकी ईमानदारी और दयानतदारी का तक़ाजा है। उसके सिर पर यही भय सवार रहता है कि

उसके वर्ग और वैयक्तिक स्वार्थों को हानि न पहुँचने पाये।

f) Riddles in Hinduism

प्रस्तावना

यह पुस्तक उन आस्थाओं को उद्घाटित करती है जिन्हें ब्राह्मण तत्वज्ञान का नाम देते हैं। यह उन सामान्य हिंदू जनों के लिये है, जो यह जानना चाहते हैं कि ब्राह्मणोंने उन्हें किस दलदल मे फंसा दिया है और इसका उद्देश उन्हें विवेक का रास्ता दिखाना है ।

पुस्तक का दूसरा उद्देश्य हिंदुओं का ध्यान इस और आकृष्ट करना है कि ब्राह्मणोंने क्या-क्या चालें चली और उन्हें अहसास कराना है कि ब्राह्मणोंने उन्हें कितना छला, कितना गुमराह किया।

पुस्तक पढने से यह पता चलेगा कि ब्राह्मणों मे एकाएक बदलाव कैसे आया। एक समय वे वैदिक देवताओं की पूजा करते थे। फिर एक समय ऐसा आया कि उन्होंने वैदिक देवताओं से किनारे कर लिया और अवैदिक देवताओं को नमन करने लगे। कोई उनसे पूछे, इंद्र, वरूण, ब्रह्मा और मित्र कहा है जिनका वेदों मे उल्लेख है, वे सभी लुप्त हो गये, क्यों ? इसलिए कि इन्द्र, वरूण, और ब्रह्मा की पूजा करना लाभप्रद नहीं रहा। बात यही तक नहीं है कि ब्राह्मणोंने वैदिक देवताओं का पूजना छोड दिया, बल्कि ऐसे उदाहरण है कि वे मुस्लिम पीरों के मुरीद बन गये।

इस संबंध मे एक ज्वलंत उदाहरण है। बंबई के पास कल्याण मे पहाडी की चोटी पर एक पीर बाबा मलंगशाह की मशहूर दरगाह है। यह बहुत ही प्रसिद्ध दरगाह है। हर साल वहाँ उर्स लगता है और चढ़ावा चढ़ाया जाता है। दरगाह का पीर एक ब्राह्मण है जो मुसलमानों जैसी पोशाक पहने वहाँ विराजमान रहता है और चढ़ावा बटोर लेता है। यह सब कमाई का धंधा है, धर्म जाए भाड में। ब्राह्मण को सिर्फ दक्षिणा से मतलब है। दरअसल ब्राह्मणों ने धर्म को व्यापार बना रखा है।

क्या बाबासाहेब के उपरोक्त सभी कथन ब्राह्मण के विरोधी नहीं है? पाठक इसका निष्कर्ष अवश्य निकाल सकते है।

ब्राह्मण और ब्राह्मणवाद में क्या अंतर है?

'ब्राह्मणवाद' इस शब्द से यदि 'ब्राह्मण' शब्द को निकाल दिया जाय तो सिर्फ 'वाद (विचार)' ही बचता है और हर विचार का निर्माता व्यक्ति ही होता है। जैसे अम्बेडकरवाद के निर्माता डा. अम्बेडकर, गांधीवाद के निर्माता गांधी, बुद्धवाद के निर्माता गौतम बुद्ध है। उसी प्रकार ब्राह्मणवाद के निर्माता भी ब्राह्मण ही है। ब्राह्मणवाद को ब्राह्मणवाद इसलिए

कहा जाता है क्योंकि इसके निर्माता ब्राह्मण है, इसका सबसे ज्यादा लाभ ब्राह्मण को ही हुआ है और उस विचार को जिंदा रखने का और फैलाने का सबसे ज्यादा प्रयास ब्राह्मण ही करता है। बुद्ध ने ईश्वर के अस्तित्व को नकारने के लिये उत्कृष्ट तर्क दिया है। बुद्ध कहते है किसी वस्तु के अस्तित्व से किसी वस्तु का निर्माण होता है। यदि कुछ भी वस्तु अस्तित्व मे नहीं है तो कुछ भी निर्माण नहीं किया सकता (Some thing is made out of something. Nothing is made out of nothing)। वैसे ही ब्राह्मण होने की वजह से ही ब्राह्मणवाद पैदा हुआ है। यदि ब्राह्मण ही उत्पन्न नहीं होता तो ब्राह्मणवाद भी पैदा नहीं हुआ होता।

अपना व्यक्तिगत चरित्र सुधारने के कारण कुछ बदतर से बेहतर ब्राह्मण मिल सकते है। लेकिन एक अच्छा (Best) ब्राह्मण नहीं मिल सकता। जैसे एक गुलाम के लिये उसका मालिक बेहतर हो सकता है। लेकिन मालिक अच्छा नहीं हो सकता। क्योंकि अच्छा आदमी मालिक नहीं हो सकता और मालिक अच्छा आदमी नहीं हो सकता। इस प्रकार अन्य ब्राह्मणों की तुलना मे कुछ ब्राह्मण बेहतर हो सकते हैं। लेकिन ब्राह्मण अच्छा नहीं हो सकता क्योंकि यदि वह अच्छा ब्राह्मण होता तो अपने आपको दूसरे जातियों के मुकाबले श्रेष्ठ क्यों मानता और दूसरों के अधिकार छिनकर अकेला ही लाभान्वित क्यों होता?

बहिष्कृत भारत के जिस अंक मे बाबासाहेब ने मै ब्राह्मण के विरोध में नहीं हूँ यह जो कथन किया है उसी अंक के अग्रलेख मे बाबा साहेब कहते है ''ऋग्वेद काल के पश्चात जब ब्रह्मदेव की प्रसूति हुआ तभी ब्राह्मण जातिवाचक बदतमीज औलाद पैदा हुई और उन्होंने पहले अपने ईर्दगिर्द घेरा बंदी कर ली और इस घेराबंदी के बाद ब्राह्मण-गैरब्राह्मण भेदभाव पैदा हुआ।'' आगे बाबा साहेब यह भी कहते है कि 'ब्राह्मणों की अमंगल गंगा का उद्गम ब्राह्मणवर्ग से ही हुआ।'

इसलिए जब-तक ब्राह्मण रहेगा तब तक ब्राह्मणवाद रहेगा ही। ऐसा कहा जाता है कि चोर को मत मारो, चोर की माँ को मारो। क्योंकि चोर को पैदा करनेवाली माँ जब तक जिंदा रहेगी तब तक चोर के निर्माण की परंपरा कायम बनी रहेगी। इसी तरह ब्राह्मणवाद यह चोर है और उस चोर की माँ ब्राह्मण है। इसलिए जब-तक ब्राह्मणवाद को पैदा करने वाली ब्राह्मण जाति अस्तित्व मे रहेगी तब-तक ब्राह्मणवाद को खत्म नहीं किया जा सकता। ब्राह्मणवाद एक विचारधारा है। वह अपने आप नहीं फैलती, ब्राह्मण उसे फैलाता है उसका प्रचार-प्रसार करता है। दूसरे लोग उसे नहीं फैलाते सिर्फ उसका पालन करते है। ब्राह्मणवाद फैलाने से सिर्फ ब्राह्मण को ही लाभ होता है और दूसरों का नुकसान होता है।

गौतम बुद्ध ने 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' के बजाय 'बहुजन-हिताय,

बहुजन-सुखाय' का नारा क्यों दिया? यह बात जब मैं बता रहा था तब एक व्यक्ति ने मुझे कहा कि आप गलत बता रहे हो। तब मैंने उसको पूछा कि कैसे? तब उन्होंने कहा कि बुद्ध ने 'भवतु सब्ब मंगलं' भी कहा है यानी सभी का कल्याण होने की बात कही है। तब मैंने उन्हें समझाया कि बुद्ध की दोनों भी बातें अपनी-अपनी जगह सही है। लेकिन दोनों के संदर्भ अलग अलग है। बुद्ध ने 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' इस संदर्भ मे कहा है कि क्योंकि बुद्ध का संघर्ष आर्यों के वैदिक संस्कृति के खिलाफ है जो संस्कृति अल्पजन हिताय और अल्पजन सुखाय की संस्कृति है। उसे पलटाने के लिये बुद्ध ने बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय कहा है क्योंकि सर्वजन को सुखी करने की समस्या नही थी, समस्या बहुजनो को सुखी करने की थी। क्योंकि कुछ अल्पजन तो पहले ही सुखी है और बहुजन दुखी है। इसलिए जो पहले ही सुखी है उनको ही सुखी करने का बुद्ध का आंदोलन नहीं था। जो बहुजन दुखी थे उन्हें सुखी करने का बुद्ध का आंदोलन था और मानवता के दृष्टिसे वही न्यायोचित भी हैं। 'भवतु सब्ब मंगलं' का संदर्भ यह है कि बुद्ध महान मानवतावादी है और एक महापुरूष ऐसा कदापि नहीं कह सकता कुछ लोगों का ही कल्याण हो और बाकी सभी दुखी हो। ऐसा यदि महापुरूष कहता है, तो वह महापुरुष कैसे हो सकता है?

राष्ट्रपिता ज्योतिराव फूले का भी ऐसा ही एक कथन है -

''मुळी बुद्धि नाही - पशुपक्षा दिका । त्याजमध्ये हाका ।। वेद वक्त्या।।
ख्रिस्त महमंद मांग ब्राम्हणासी ।। धरावे पोटासी बंधुपरी।।
मानव भावंडे सर्व एक सहा ।। त्याजमध्ये आहां ।। तुम्ही सर्व ।। बुद्धी
सामर्थ्याने सुख द्यावे घ्यावे । दिनास पाळावे ।। ज्योति म्हणे।।''

- यानी जिन्हें बुद्धि नहीं है उन्हें वेद को जाननेवाले लोग पशुओं जैसे हाँकते हैं। हमने क्रिश्चन, मुसलमान, मातंग और ब्राह्मणों को प्यार से पेट से लगाना चाहिये। अपने बुद्धि सामर्थ्य से गरीबों का पालन करना चाहिये, सभी को सुखी करना चाहिये, क्योंकि हम सभी मानव एक समान भाई-भाई है। फूले साहब के इस वाक्य से कि ब्राह्मणों को भी प्यार से पेट से लगाना चाहिये इसका आधार बना कर हमारे लोग कहते हैं फूले साहब भी ब्राह्मणो के खिलाफ नहीं थे। फूले साहब मानवता के महानायक है वे ऐसा कदापि नहीं कह सकते कि क्रिश्चन, मुसलमान और माँगो को पेट से लगाइये और ब्राह्मणों को लातों से मारीये। अगर वें ऐसा कहते हैं तो वे मानवतावादी नहीं हो सकते। दूसरे एक कथन मे फूले कहते हैं।

आर्य अपभ्रंश इराण्याचा झाला ।। दिमाखे म्हणाला ।। भट श्रेष्ठ ।।
पाखांडेही सारे वेद लपविती ।। जगा लागी भीती ।। ज्योती म्हणे ।।

यानी इरानी शब्द का अपभ्रंश आर्य हो गया है और आर्य अकडसे कहता है ब्राह्मण

सर्वश्रेष्ठ है। उसने वेदों को छिपाकर पाखंड किया और दुनिया को डराया है। क्या फूले साहब का यह कथन ब्राह्मण के विरोध मे नहीं है?

ब्राह्मण, ब्राह्मणवाद यह गाली नहीं है

हमारे लोग ब्राह्मण और ब्राह्मणवाद को गाली समझते हैं। यदि यह गाली होती तो फूले तथा बाबासाहेब ने इन शब्दों का प्रयोग कर क्या ब्राह्मणों को गाली गलोच की है? क्या फूले-अम्बेडकर इतने गिरे हुए महामानव हैं कि वे गाली गलोचपर उतर आये? यह शब्द गाली नहीं बल्कि विषमता के प्रतीक है। वे समता, स्वतंत्रता तथा भाईचारे के दुश्मन हैं, वे दूसरों को नीच और स्वयं को श्रेष्ठ मानने के प्रतीक है, यह पाखंड, गर्व, शोषण तथा दूसरोंका खून चूसने वाली विचारों के प्रतीक हैं। मनुस्मृति तथा ब्राह्मणी धर्मग्रंथ इसके सबूत है।

क्या फूले-बाबासाहेब इन्होंने कोई ऐसी दंड संहिता ब्राह्मणो के लिये बनायी जिसमें ब्राह्मणोको नीचा मानो, उन्हें धन-संपत्ति तथा शिक्षा के अधिकार से वंचित करों, उनको मत छुओ, ऐसा कोई आदेश दिया हुआ है?

इन शब्दों का उल्लेख इसलिए किया जाता है क्योंकि वे शोषण के प्रतीक हैं और शोषितों को पता नहीं है कि उनके शोषक तथा दुश्मन कौन है? शोषितों की लड़ाइयाँ अक्सर इसलिए हारी जाती हैं क्योंकि उन्हें अपने दुश्मन कौन और दोस्त कौन इसकी पहचान नहीं होती। वे दुश्मन को दोस्त समझते हैं और दोस्त को ही दुश्मन समझते हैं। इसलिए उनकी हार होती है।

परंतु हमारे लोग ब्राह्मण तथा ब्राह्मणवाद इन शब्दों को ही गाली समझते है। हमारे लोगों को साढे तीन प्रतिशत ब्राह्मणों की बहुत चिंता होती है हालाँकि ब्राह्मण अपनी चिंता करने मे स्वयं सक्षम और सशक्त है। इसलिए उनकी चिंता करना इतना न्यायोचित नहीं है जितनी कि 85 प्रतिशत मूलनिवासी बहुजनों की जो ब्राह्मणवाद के कारण शोषित, पीड़ित, लाचार, निराधार बनाये हैं और जो जानवर से भी बदतर जीवन जीने के लिये मजबूर किये गये हैं।

ब्राह्मणों के आंदोलनों मे घुसपैठ करने के दुष्परिणाम

हमारे समाज के लोग पश्चात बुद्धि के लोग है यानी सारा सत्यानाश होने के बाद पश्चाताप करने वाले लोग हैं। सत्यानाश के पहले हम सतर्क नहीं रहते। जहर की परीक्षा खा कर नहीं की जाती और हम उसे खा कर करते हैं। ब्राह्मणों का यह इतिहास रहा हैं कि यह जब उनके हितसंबंध खतरे में पडे तब-तब उन्होंने हमारे साथ बेईमानी कर षडयंत्र रचे हैं और हमारे आंदोलनों मे घुसपैठ कर उन्हें तहस नहस किया हुआ है। घुसपैठ करने के उनके दो तंत्र है। पहला तंत्र यह है कि यदि आप सक्षम नहीं है परंतु आप कट्टर

ब्राह्मणवाद के विरोधी है। तब इस ब्राह्मण विरोधी धार को बेधार करने के लिये आपको ही उनके आंदोलनों मे समाहित कर लेते है जिसे वे समरसता कहते है। समरस होने से हमारा अपना अस्तित्व तथा हमारा अपना वजूद खत्म हो जाता है और फिर हम हम नहीं रहते उनके हो जाते है। हमारी अपनी विचारधारा लुप्त हो जाती है और उनकी विचारधारा हमारे दिले दिमागों पर छा जाती है। हमारे गुणगौरव के विषय हमारे नहीं रहते। उनके गुणगौरव के विषय ही हमारे विषय हो जाते है। इस तरह वे हमें उन में ही समाकर निगल लेते हैं।

दूसरा तंत्र है कि यदि आप सक्षम हो जाते हो और उन में समरस नहीं होते तब वे हम भी फूले-अम्बेडकर के अनुयायी होने का नाटक कर आपके आंदोलनों मे घुसपैठ करते हैं। ब्राह्मण हमारे संगठनों मे हमारा उत्थान करने नहीं आते बल्कि ब्राह्मणविरोधी धार भोथरी करने तथा ब्राह्मणो की रक्षा करने के लिये आते है। सम्राट अशोक के काल में 60000 नकली बौद्ध भिक्खु बनकर संघ मे शामिल हुये थे तब सम्राट अशोक ने उन्हें संघ से निकाल दिया था जिसकी वजह से बौद्ध धम्म का विभाजन हो कर उसमे दो पंथ महायान और हीनयान निर्माण हुये। अशोक के काल मे ही पुष्यशुंग नाम का ब्राह्मण सेना मे भरती हुआ जो कि उसके पैत्रक व्यवसाय के विसंगत था और उनके धर्मशास्त्रों की आज्ञा का उल्लंघन था। सेनापति बनने के पश्चात सम्राट अशोक का पोता बृहद्रथ जो कि मौर्य वंश का आखिरी राजा था उसकी धोखे से हत्या कर स्वयं राजा बन बैठा और उसने बौद्ध धम्म का खात्मा कर ब्राह्मणीधर्म को पुर्नजीवित किया और मनुस्मृति लिखकर हमारा सत्यानाश किया।

हमारे कुछ विद्वान साहित्यकार ब्राह्मणों के समरसता मंच पर जाने की वकालत करते है कि हम ब्राह्मणों को अम्बेडकरवाद समझाने के लिये उनके मंच पर जाते है। ब्राह्मण नादान नहीं हैं। उन्होंने अम्बेडकर वाद को हमसे ज्यादा समझा है। हम तो डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर को सिर्फ मानते हैं, जानते नहीं और वे जानते हैं मगर मानते नहीं। क्योंकि डॉ. अम्बेडकर यही वह शख़्स है जो ब्राह्मण तथा ब्राह्मणवाद का बेड़ा गर्क करने की क्षमता रखता है। इसलिए वे उन्हें मानते नहीं पर जानते जरूर है। हमारे साहित्यकार यह भी दलील देते हैं कि हम किसी के भी मंच पर जा सकते हैं क्योंकि साहित्यकार की कोई जाति नहीं होती। हमारे लोग तर्क-कूर्तक करने में तो बहुत माहिर है। लेकिन उसी मंच पर ब्राह्मण इनका परिचय महान विद्वान दलित साहित्यकार के नाम से कराते हैं और दलित नाम का मटका इनके गले में लटकाकर इन्हें अपनी औकात का अहसास करा देते हैं। फिर भी हमारी अक्ल ठिकाने नहीं आती।

परिवर्तन का सिद्धांत है कि शासक, शोषक और शोषित मिलकर कभी भी परिवर्तन नहीं हो सकता, परिवर्तन का आभास मात्र किया जा सकता है।

इसलिए फूले-अम्बेडकर जी ने कभी अपने आंदोलनों मे ब्राह्मणों को शामिल नहीं किया वे एक व्यक्ति की हैसियत से ब्राह्मण के विरोध में नहीं थे। परंतु ब्राह्मण जाति के खिलाफ जरूर थे, क्योंकि ब्राह्मण अपने ब्राह्मण्य के अस्तित्व से प्राप्त श्रेष्ठता का कभी त्याग नहीं करता और ब्राह्मणजाति का मुकुट पहने बगैर नहीं रह सकता। इसलिए ब्राह्मण और ब्राह्मणवाद दोनों भी फूले-अम्बेडकरी आंदोलन और मूलनिवासियों के दुश्मन है यह निर्विवाद कड़वा सच है।